Dr. Gautam Kumar.
B.A Part-III(H)
PAPER-IV

अरविन्द घोष
(Aurbindo Ghosh)

श्री अरविन्दो का पूरा नाम अरविन्द घोष था। अरविन्द घोष का जन्म 15 अगस्त, 1872 ई० को पश्चिम बंगाल के कोननगर में हुआ था। इनके पिता का नाम डॉ कृष्णाधन घोष था। अरविन्द घोष की पढ़ाई का प्रारम्भ दार्जीलिंग के "लोरेन्टो कान्वेन्ट स्कूल" में हुआ। अरविन्दो भारतीय पुनर्जागरण और भारतीय राष्ट्रवाद की एक महान विभूति थे। वे कवि, भविष्य द्रष्टा, साहित्य स्रष्टा, मनीषी, देशभक्त, राजनीतिक, दार्शनिक और इन सभी से ऊपर मानवता के प्रेमी थे। उन्होंने बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक क्षेत्र में महान उपलब्धियाँ प्राप्त कर देश के शिक्षित समाज पर गहरा प्रभाव डाला। रोमा रोलां अरविन्द को एशिया की प्रतिभा तथा यूरोप की प्रतिभा का सर्वश्रेष्ठ समन्वय मानते थे। अरविन्द घोष ने 'कर्मयोग' तथा 'धर्म' नामक दो साप्ताहिक पत्र का भी प्रकाशन किया। पाण्डिचेरी प्रवास के बाद उन्होंने संन्यासी जीवन को अंगीकार कर लिया। 5 दिसम्बर, 1950 को इनका देहावसान हो गया।

श्री अरविन्द का राजनीतिक दर्शन
(Political Philosophy of Sri Aurbindo)

अरविन्द बहुमुखी प्रतिभा के धनी, एक कवि, तत्वज्ञानी मनीषी, भविष्य द्रष्टा और राजनीतिक दार्शनिक थे। श्री अरविन्दो का राजनीतिक दर्शन निम्न है :-

भारतीय और यूरोपियन दर्शन के बीच समन्वय - श्री अरविन्द को पाश्चात्य जगत तथा भारत और अन्य पूर्वी देशों, दोनों के ही दर्शन, साहित्य तथा जीवन का भली-भाँति ज्ञान था। उनका विचार था कि बौद्धिक तथा राजनीतिक क्रियाकलापों के क्षेत्र में भारतीयों के पास अनेक उपलब्धियाँ रही हैं लेकिन भारतीय प्रतिभा की

उच्चतम अभिव्यक्ति वैकुण्ठी ऋषियों तथा बुद्ध की शिक्षाओं के रूप में हुई है। कालान्तर में इस स्थिति ने भारतीयों में संसार को त्यागने की प्रवृत्ति उत्पन्न कर दी और प्राकृतिक जगत की क्षण भंगुरता पर बहुत अधिक बल देकर राष्ट्र की प्राण शक्ति को दुर्बल कर दिया। निवृत्ति और निर्वाण के बढ़ते हुए उपदेश तथा इस प्रवृत्ति के कारण जीवन के शुद्ध भौतिक क्षेत्रों में भारत विश्व के अन्य देशों के साथ प्रतियोगिता कराने में सफल न हो सका। कि इसके विपरीत यूरोप भौतिकवाद का गढ़ रहा है। यूरोप और पश्चिम के अनेक भौतिकवादी विचारक के द्वारा किए गए वैज्ञानिक पद्धति के पूर्ण विकास ने पश्चिम में घोर भौतिकवाद और लौकिकवाद को प्रोत्साहित किया है और समाज को बौद्धिक आधार पर संगठित करने का संदेश दिया है। उन्होंने कहा कि भारतीय आध्यात्मवाद और पश्चिम के लौकिकवाद तथा भौतिकवाद के बीच समन्वय स्थापित किये जाने की आवश्यकता है। मानव जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए एक ऐसे दर्शन की स्थापित की जानी चाहिए, जिसमें पदार्थ और आत्मा दोनों के ही महत्व को स्वीकार किया जाय। इसी विचार धारा के आधार पर रोमा रोलां ने उन्हें "एशिया तथा यूरोप की प्रतिभा का समन्वय" कहा है।

(ii) आध्यात्मिक नियतिवाद या दैवी न्यायवाद - जिस प्रकार कार्ल मार्क्स ने इतिहास की आर्थिक व्याख्या प्रस्तुत की है, उसी प्रकार महर्षि अरविन्द ने मानवीय इतिहास के प्रसंग में आध्यात्मिक नियतिवाद या दैवी न्यायवाद के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया।

उनका कहना था कि इतिहास ईश्वर इच्छा की क्रमिक अभिव्यक्ति है और इतिहास के ऊपर से निष्प्रयोजन तथा परस्पर विरोधी प्रतीत होने वाली घटनाओं के मूल में ईश्वरीय इच्छा और शक्ति ही काम कर रही है। अरविन्द काली को परमात्मा की नियामक शक्ति का प्रतीक मानते थे। उनके अनुसार, "काली का गतिशील क्रियाकलाप ही इतिहास है।" उन्होंने बताया कि भारत में ब्रिटिश शासन और उसके द्वारा भारतीय जनता का दमन, उत्पीड़न और अपमान ईश्वरीय योजना का ही अंग था। ईश्वर ने भारतीयों को आत्मनिग्रह की शिक्षा देने के लिए एवं इन तरीकों का प्रयोग किया।

अब भारतीय पुनरुत्थान के मूल में भी ईश्वरीय इच्छा ही कार्य कर रही है। ईश्वर की इच्छा है कि भारत एवं अपने लिए स्वाधीनता प्राप्त करें और समस्त विश्व को कल्याण के मार्ग पर आगे बढ़ाएँ। अरविन्द का यह "दैवी न्यायवाद" (दैवी न्याय का सिद्धांत) भगवद्गीता के विचारों तथा जर्मन आदर्शवाद के समन्वय का प्रतीक है।

Scanned with CamScanner